IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सन्त कवि सुन्दरदास के शैक्षिक विचारों की वर्तमान भारत में उपादेयता

डॉ॰ सीमा देवी
सहायक आचार्य
मेहरचंद महाजन दयानंद एंग्लो वैदिक
महाविद्यालय, कांगड़ा (हि.प्र)

सारांश

शिक्षा मानव समाज के उन्नति और प्रगति के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। समाज में यह ज्ञान, समझ, बुद्धि और समर्पण की भावना को विकसित करती है। शिक्षा की समानता का आधार शिक्षा व्यवस्था ही है। आधुनिक समाज में ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो समाज के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो क्योंकि बिना शिक्षा के मानव पशु के समान है। भारत देश ऋषियों, मुनियों, आर्यों, विचारकों, दर्शनिकों एवं संतों की धरा है। इस वसुधा में अनेक सन्त हुये, जिन्होंने अपनी शिक्षा, दर्शन एवं विचारों से राष्ट्र को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। सन्त कवि सुन्दरदास के शिक्षा से संबंधित विचार वर्तमान में प्रासंगिक प्रतीत होते है।

प्रस्तावना आधुनिक समय में तकनीकी एवं वैज्ञानिकता के बदलते प्रभाव से व्यक्ति का रहन- सहन, खान –पान, जीवन एवं समाज प्रभावित हुआ है। ज्ञान एवं शिक्षा की अपेक्षाएँ बढ़ने लगी और सामाजिक ढाँचे बहुत अधिक प्रभावित हुए। शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये विषयों का समावेश हुआ। वर्तमान में भारतीयता का चेहरा बदलता हुआ प्रतीत हो रहा है, आज आवश्यकता है अतीत के साहित्य से मार्गदर्शन लेकर वर्तमान ज्ञान की सीमाओं को पुष्ट करने की। इस संदर्भ में देखा जाए तो प्राचीन काल में जन्में अनेक ऋषियों, मुनियों, तपस्वी, शिक्षा शास्त्रियों, विद्वानों एवं दर्शनिकों के विचार आधुनिक समय में अधिक प्रासंगिक हो उठे है। भारतभूमि में जन्में ऋषि, आचार्य चाणक्य, गुरु शंकराचार्य, वाल्मीकि, गुरुनानक, कलिदास, तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, स्वामी विवेकानंद, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, डॉ.भीमराय अम्बेडकर, महात्मा गांधी, दादूदयाल, रैदास, सुन्दरदास आदि के चिन्तन एवं दर्शन ने ज्ञान के सम्बर्द्धन के साथ समाज की उन्नति के लिए शिक्षा प्रणालियों का भी विकास किया। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक शोध हुए है लेकिन वर्तमान में आवश्यकता है गुणात्मक शोधों की। निर्गुण संत कवियों में सुन्दरदास सर्वाधिक शास्त्र निष्णात, सुपठित और व्युत्पन्न व्यक्ति थे। उनके शैक्षिक विचार वर्तमान में प्रासंगिक प्रतीत होते है।

संत कवि सुन्दरदास का व्यक्तित्व ज्ञान के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाले संत सुन्दरदास एक कवि नहीं बल्कि एक महान संत धार्मिक एवं सामाजिक सुधारक थे। अपनी प्रखर प्रतिभा, भगवत प्रेम एवं उत्तम स्वभाव के कारण यह सबके प्रिय हो गये। भारतीय तत्वज्ञान के सभी रूपों को शास्त्रीय ढ़ंग से प्रस्तुत कर दिया है किन्तु यह समझना भूल होगी कि ये षटदर्शनों के शास्त्रनिर्णीत मतवादों में एक पण्डित जैसी आस्था रखते थे। ये योगमार्ग के समर्थक और अद्धैतवेदान्त पर पूर्ण आस्था रखने वाले थे।

सुन्दरदास का जन्म देवनागरी दौसा में बूसर गौत्र के खंडेलवाल वैश्य कुल में चैत्र सुदी नवमी, संवत 1653 में हुआ। उनके पिता का नाम 'सार चोखा परमानंद' तथा माता का नाम 'सती' था। सुन्दरदास 'दादूदयाल' के शिष्य थे। छोटी आयु में ही गुरु से दीक्षा और आध्यात्मिक उपदेश प्राप्त कर लिया था। संवत 1664 में जगजीवन जी दादू शिष्य रज्जब आदि के साथ काशी में चले गये। काशी रहकर उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, व्याकरण, कोश, षडशास्त्र, पुराण, वेदान्त का गहन अध्ययन किया। संख्य योग वेदान्त के बृहदशास्त्र, उपनिषद, गीता, शंकर भाष्य आदि का भली भांति मनन किया। काशी में सुन्दरदास असीघाट के पास रहते थे। सुन्दरदास का देशाटन के प्रति शौक होने के कारण जहाँ-जहाँ आपका देशाटन कथा कीर्तन तथा संभर, आमेर, कल्याणपुर, दिल्ली, आगरा, लाहौर, गुजरात, मेवाड़, मालवा, बिहार आदि स्थानों पर जाया करते थे।

शैक्षिक पृष्टभूमि सन्त कवि सुन्दरदास बाल कवि थे। उनकी वाणी में साधु महात्मा की भांति प्रेम, वैराग्य, गुरुभक्ति एवं अनुभव ज्ञान से परिपूर्ण था। सन्त कवि सुन्दरदास का साहित्य सृजनकाल संवत 1664 से लेकर मृत्युपर्यन्त चलता रहा आपने बयालीस मौलिक ग्रन्थ लिखे इनके ग्रन्थों की भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट, सरस, सारयुक्त है। ज्ञान समुद्र, सुन्दरविलास, सुखसमाधि, वेद विचार आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ है। अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय तत्वज्ञान के प्राय: सभी रूपों का दर्शन कराया। इनकी दृष्टि में अन्य सामान्य संतों की भांति ही सिद्धान्त ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान का महत्त्व अधिक था। यह योग और अद्धैतवेदान्त के पूर्ण समर्थक थे।

उनकी वाणी से प्रमानित होता है कि उन्हों गीता, भागवत, पुराण ,उपनिषद आदि का पूर्ण ज्ञान था, उन्हें स्थानीय भाषा के साथ-साथ ब्रजभाषा, राजपूतानी और खड़ी बोली मिश्रित भाषा, फारसी शब्द मिश्रित, पंजाबी, पूर्वी, गुजरती भाषाओं में कविता की है।

शोध की आवश्यकता शोध के माध्यम से किसी भी देश की उन्नति संभव है, किसी भी देश के इतिहास को शिक्षा के अध्ययन से जाना जा सकता है। राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र के नागरिकों का निर्माण करती है। भारत ऋषियों एवं संतों का देश कहा जाता है, जिनके विचारॉन का प्रभाव भारतीय शिक्षा पर पड़ा है परंतु वर्तमान शिक्षा ने अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित होकर अपने गौरवमयी अतीत को भूला दिया है जिसके कारण भारतीय शिक्षा को भारत के नव निर्माण का एक प्रभावी साधन बनाने के लिए शिक्षा का भारतीयकरण किया जाना आवश्यक है, इसके लिए साहित्य का अध्ययन करके, शिक्षा के विभिन्न अंगों का चयन करके, इनके आधार पर भारतीय शिक्षा दर्शन का निर्माण करना चाहिए। सन्त कवि सुन्दरदास के शैक्षिक विचारों का अध्ययन वर्तमान शिक्षा के लिए सार्थक एवं प्रभावशाली होगे। वर्तमान शिक्षा की मूलभूत आवश्यकताएँ सामाजिक सामनता, व्यक्तित्त्व का निर्माण, प्रजातांत्रिक भावना का विकास, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा, संस्कृति की शिक्षा, राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्राष्ट्रीय सदभावना की शिक्षा आदि जिनका समाधान एवं पूर्ति सन्त कवि सुन्दरदास के शिक्षा दर्शन में उपलब्ध है।

अध्ययन का उद्देश्य

- शोध अध्ययन के उद्देश्य को हम निम्नलिखित रूप से व्यक्त कर सकते है।
- सुन्दरदास के दार्शनिक विचारों की पृष्टभूमि एवं शिक्षा दर्शन की रूप रेखा दिखाना
- शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन करना।
- शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालना।
- शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में विचार।
- नैतिक शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों की शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सुन्दरदासके नैतिक विचारों का अध्ययन।

सन्त कवि सुन्दरदास की शैक्षिक विचारधाराएँ सुन्दरदास ऐसे एकमात्र निर्गुण सन्त थे जो शिक्षित थे, जिन्होंने सभी शास्त्रों का ज्ञान काशी में प्राप्त किया। उनके विचारों में शैक्षिक विचारों को वाणी दी जा सकती है। सन्त कवि सुन्दरदास ने समाज के पतित होते मूल्यों का इतनी बारीकी से अध्ययन किया। वर्ण व्यवस्था पर उनके विचार एवं चिन्तन निर्गुण संतों से अलग था। वर्ण व्यवस्था की संरचना को उन्होंने शास्त्रीय ढ़ंग से परिभाषित किया-सूत्र गरे मंहि मेलि भयौ/ द्विज ब्राह्मण है, करि ब्रह्म न जान्यौ/ क्षत्रिय हरै करि क्षत्र धयौ सिर है/ गय पैदल सौं मन मान्यौ। इन्होंने सामाजिक समानता, धार्मिक आडंबरों, अंधविश्वासों, नारी निंदा एवं मानवीय मूल्यों के महत्त्व पर चर्चा की है।

शिक्षा का अर्थ- सन्त कवि सुन्दरदास ने मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मुक्ति माना है। इस मुक्ति के लिए उन्होंने ज्ञान मार्ग पर बल दिया है। उनके अनुसार जब मानव को यह ज्ञात हो जाता है कि भगवान सत्य है और शेष असत्य, तभी वह सांसरिक मोहमाया से मुक्त होता है और स्वंय को पहचनता है। ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा से ही प्राप्त होती है।

शिक्षा का स्वरूप एवं आवश्यकता- शिक्षा वह है जो मानव को स्वतंत्र बनाए अथवा उसे पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करे। मानव में सेवा, धर्म सबके कल्याण की एवं मंगल की जो बात करे वही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा समाज में संचित सीख है, जिसे मानव परम्परा एवं परिस्थिति के अनुसार ग्रहण करता है। वह वस्तु नहीं चेतना है जिसे मनुष्य स्वंय ग्रहण करता है।

शिक्षा का उद्देश्य- शिक्षा मानव के जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। उद्देश्य के अभाव में शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। सन्त कवि सुन्दरदास ने शिक्षा के उद्देश्य निम्न बताए-

मोक्ष का उद्देश्य- शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति माना है। सन्त कवि सुन्दरदास ने कहा कि इंद्रियों को वश में रखकर ही मोक्ष प्राप्त होता है।

विश्व बंधुत्व की भावना- शिक्षा का उद्देश्य कवि के अनुसार प्राणियों के हृदय में वासुदेव कुटुम्ब का भाव, सर्वमंगल का कल्याण एवं विश्व बंधुत्व की भावना भरना है।

समानतामूलक समाज की स्थापना- सन्त कवि सुन्दरदास ने समाज में समानता की स्थापना करने की बात की है।

सेवाधर्म का विकास- सेवा ही वास्तविक धर्म है। सेवा के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। दीन दुखियों, बेसहरा लोगों के साथ-साथ अपने बुजुर्गों, माता-पिता, गुरुजनों एवं बड़ों की सेवा करनी चाहिए यहो ईश्वर सेवा है।

सत्य अनुकरण का उद्देश्य- सत्य की हमेशा जीत होती है। मानव को हमेशा सत्य का साथ देना चाहिए एवं जीवन में सत्य का अनुकरण करना चहिये। वेदों, उपनिषदों एवं सभी धर्मों का मूल सत्य है। जो मानव सत्य को छोड़ता है, उसका जीवन पशु तुल्य है।

सभी जाति, वर्ग के प्रति समान भावना का विकास- सन्त कविवर का कहना था कि शिक्षा ही साधारण व्यक्ति में ऐसी योग्यता पैदा कर सकती है, जिससे वह वर्ग एवं जाति भेद का विरोध कर सकते हैं, कोई मनुष्य केवल जन्म के आधार पर ऊँचा या नीचा नहीं बनता बल्कि कर्म के आधार पर बनता है।

अंधविश्वास का परित्याग- शिक्षा शिशु में ऐसी चेतना जागृत करे, जिससे वह अंधविश्वास का परित्याग करने के योग्य बन जाए।

सन्त कवि सुन्दरदास के शैक्षिक विचारों की वर्तमान भारत में उपादेयता किसी भी सन्त कवि के साहित्य या उनकी वाणी की उपादेयता वर्तमान परिवेश में हुए परिवेश में हुए परिवर्तन के मापदण्ड से मापी जाती है, जैसा कि हमने सामाजिक परिस्थितियों का सन्त गुरु सुन्दरदास युगीन भारत के अध्याय के अंतर्गत अध्ययन किया। मध्ययुग रूढ़ियों, अंधविश्वासों और कुरीतियों का युग था। इतिहास बताता है कि साहित्यिक, धार्मिक, राजनीतिक और दार्शनिक प्रत्येक स्तर पर संतों ने लकीर को ठकराते हुए फकीर की भूमिका निभाई। हिन्दू एवं मुस्लिममानों में धार्मिक भावात्मक एकता लाने का उन्होंने प्रयास किया। सन्त कवि सुन्दरदास ने शिक्षा प्राप्ति की चार विधियों पर प्रकाश डाला, उनके अनुसार-'चिन्तन अथवा विचार विमर्श/ सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीना/ सतसंगति को प्रधानता/ अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। इनके विचार प्राचीन भारतीय विचार परम्परा के पोषक हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित बनाया जाता था। वह जीवन के चार लक्ष्यों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कर सके। तन,मन, विवेक एवं आत्मा के बहुमुखी विकास की कल्पना सन्त कवि सुन्दरदास ने की है। उनके अनुसार शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। वह मानव का शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक, व्यावसायिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विकास करती है। वह न केवल आवागमन से बल्कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और मानसिक दासता से भी मनुष्य को मुक्ति प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

- मिश्र, रमेशचंद्र, सुन्दर ग्रंथावली, प्रथम भाग, नई दिल्ली, किताबघर, 1992, पृ. 30
- कौशिश, (डॉ.) कृष्णकुमार, सन्त कवि सुन्दरदास और उनका काव्य, दिल्ली, साहित्य मन्दिर, 1995, पृ. 124
- दीक्षित, (डॉ.) त्रिलोकी नारायण, सुन्दर दर्शन, दिल्ली, किताब महल, 1953, पृ. 20
- श्री वास्तव, (डॉ.) जगदम्बा प्रसाद, सन्त रज्जब एवं सुन्दरदास, गुजरात, परिमल प्रकाशन, 2007, पृ. 182